Study of Correlation between self-confidence and academic achievement of Bed trainees

बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन

Mrs. LAKSHMI KOTRE

PhD. Research Scholar, Education,
Department of Education
Bharti Vishwavidyalaya,
Durg, Chhattisgarh, India.

सारांशः– अध्ययन का उद्देश्य बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना है। अध्ययन में जगदलपुर शहर में अध्ययनरत 100 बी.एड़ प्रषिक्षणार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। समस्या की प्रकृति के आधार पर यादृच्छिक विधि का चुनाव किया गया है। आत्मविश्वास का परीक्षण डी.डी. पाण्डेय द्वारा निर्मित रेडीमेंट टेस्ट तथा शैक्षिक उपलब्धि के लिए बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के प्रथम वर्ष की अंकसूची का उपयोग किया गया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

मूलशब्दः– बी.एड़ प्रशिक्षणार्थि, आत्मविश्वास, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना :–

षिक्षा व्यक्ति के जीवन में निरन्तर चलने वाली वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति में ज्ञान, कौषल एवं अभिवृत्ति का विकास होता है। आत्मविश्वास वस्तुतः एक मानसिक एवं आध्यात्मिक शक्ति है। आत्मविश्वास से ही विचारों की स्वाधीनता प्राप्त होती है और इसके कारण ही महान कार्यों के सम्पादन में सरलता और सफलता मिलती है, वही दूसरी ओर हम देखते हैं कि शिक्षा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, शिक्षा के बिना मानव का कोई अस्तित्व नहीं है, शिक्षा ही है, जिसके माध्यम से हम बालक की अन्तर्निहित ज्ञान को अभिव्यक्ति तक ले जा सकते हैं।

षैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा शैक्षिक लक्ष्य की प्राप्ति किस हद तक की है। अर्थात किसी विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि वर्षभर में किये गए कार्यो का परीक्षण उपरांत प्राप्त परिणाम के आधार पर निकाल सकते है। शैक्षिक उपलब्धि के अर्थ एवं भाव को निम्न परिभाषा से स्पष्ट कर सकते है–

गैरिसन–

"शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विषिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती है।"

चार्ल्स स्किनर –"कार्य का अंतिम परिणाम, शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।"

संबंधित साहित्य का विवरण एवं समीक्षा :–

इस शोध से संबंधित साहित्य है जो पूर्व मे किए जा चुके है निम्नलिखित है–

1. डॉ. शिक्षा बनर्जी प्रकाशन वर्ष 2011– "हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर उनके कलात्मक अभिरूचि के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।"

मुख्य निष्कर्षः–

1. बहिर्मुखी छात्राओं के कलात्मक आत्मविश्वास और कलात्मक अभिरूचि में धनात्मक संबंध पाया गया।

2. बहिर्मुखी छात्राओं के कलात्मक आत्मविश्वास और कलात्मक अभिरूचि में अति न्यून सह संबंध पाया गया।
3. अंतर्मुखी छात्राओं के कलात्मक आत्म विश्वास और कलात्मक अभिरूचि में धनात्मक संबंध पाया गया।
4. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में सार्थक अंतर पाया गया।
5. अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों के आत्मविश्वास स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

2. अभिमन्यु प्रसाद शर्मा–''अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन''

मुख्य निष्कर्षः–

1. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं पाया गया।
2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में अंतर नहीं पाया गया।
3. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर नहीं पाया गया।
4. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध के मध्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
5. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर उनके लिंग का प्रभाव पाया गया।
6. अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

3. सोनी पवन कुमार (2010) उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

समस्या कथन :–''बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन''

शोध के उद्देश्य :–''बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध का अध्ययन''

शोध की परिकल्पना :– बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

न्यादर्श :– समिष्टि में चुने प्रतिदर्श केवल जगदलपुर शहर के बी.एड. महाविद्यालय में अध्ययनरत अंतिम वर्ष के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध विधि :– इस समस्या की प्रकृति के आधार पर यादृच्छिक विधि का चुनाव किया गया है।

उपकरण :– आत्मविश्वास का परीक्षण डी.डी. पाण्डेय द्वारा निर्मित रेडीमेंट टेस्ट एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के प्रथम वर्ष की अंकसूची का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रयोगः–प्रस्तुत लघुशोध में प्रदत्तो के विश्लेषण कार्य निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान ।
2. मानक विचलन।
3. क्रांतिक अनुपात ।
4. सह संबंध।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं निष्कर्ष :–

बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक –01

बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक।

क्र.	चर	संख्या	मध्यमान (M)	सरणीमान	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता 0.05 स्तर
1.	आत्मविश्वास	100	28.46	.088	.201	सार्थक
2	शैक्षिक उपलब्धि		72.00			

उपर्युक्त सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट है कि बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक .201 है। जबकि df 98 पर 0.05 स्तर पर सारणीमान 0.88 है। इस प्रकार परिकलित मान सारणीमान से अधिक है। अर्थात् .088 बड़ा है .201। अतः सहसम्बन्ध सार्थक प्राप्त होता है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है। इस प्रकार परिकल्पना असत्य है एवं अस्वीकृत होती है।

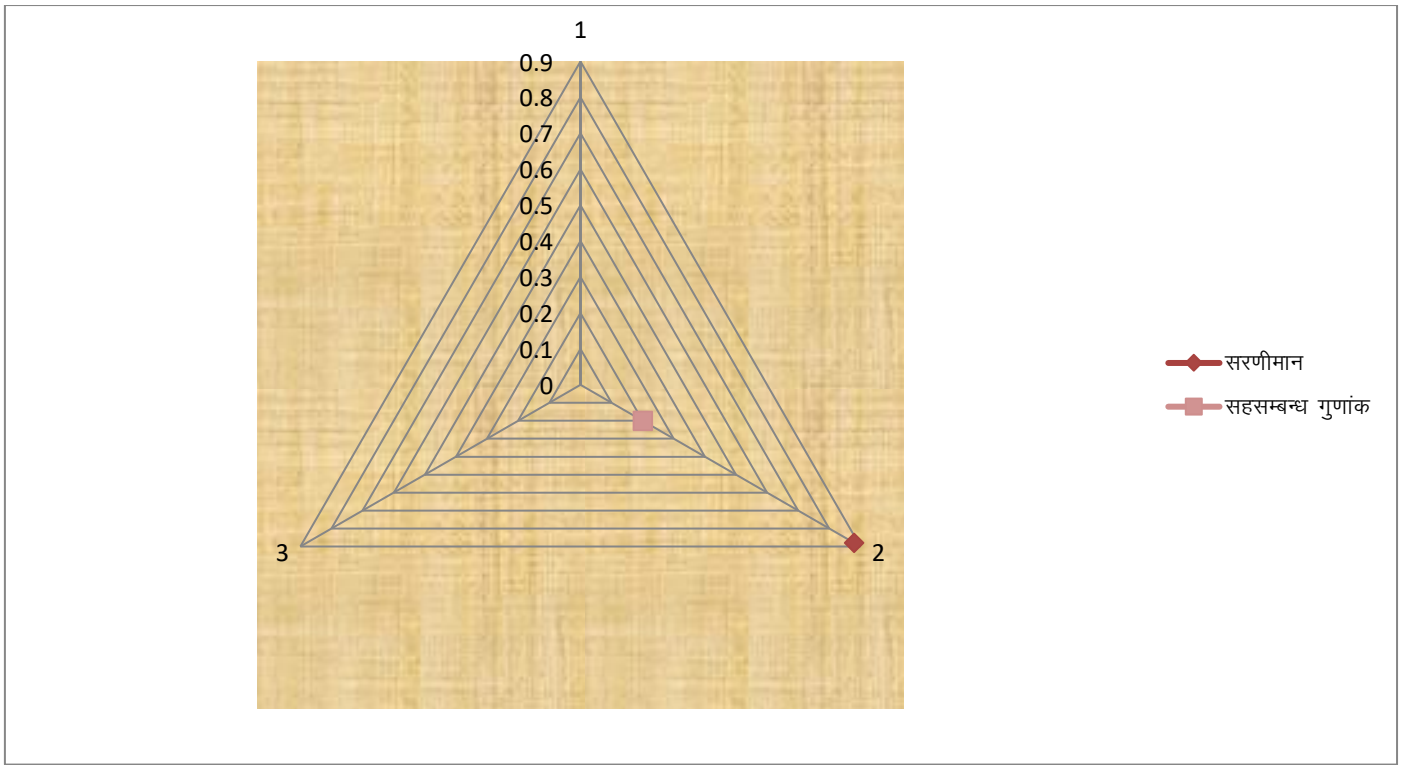

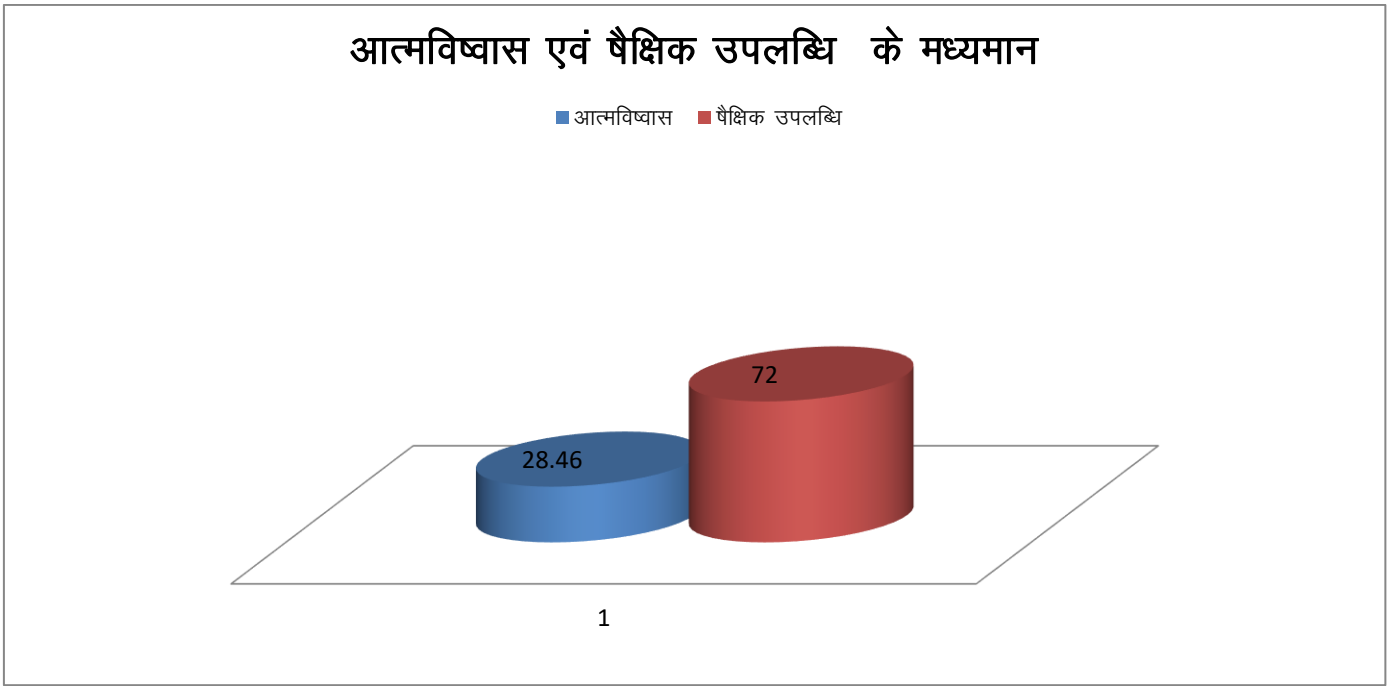

सुझावः–

विद्यार्थियो ं के लिए सुझाव :–

1. विद्यार्थी अपना सारा ध्यान पढ़ाई में लगावें।
2. विद्यार्थियों को विद्यालय/महाविद्यालय के अन्य गतिविधियों में भाग लेना चाहिए।
3. विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वासी होने चाहिए।
4. विद्यार्थी को महत्वकांक्षी होने चाहिए।
5. विद्यार्थी सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अपना सम्पूर्ण कार्य करे।
6. विद्यार्थियों को स्वयं के आत्मविश्वास में विश्वास करनी चाहिए।
7. विद्यार्थी अपने सहपाठी मित्रों का भी आत्मविश्वास वृद्धि करने में सहायता करनी चाहिए।
8. विद्यार्थी अपने माता–पिता, गुरूजनों एवं वरिष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए।

अभिभावको ं के लिए सुझाव :–

1. माता–पिता को अपने बच्चों की नैतिक, सामाजिक, पर्यावरण, स्वास्थय शिक्षा में विशेष ध्यान देना चाहिए।
2. माता–पिता अपने बच्चे की समस्याओं को समझना तथा उनका उचित समाधान करना।
3. माता–पिता बच्चे की रूचि को पहचाने तथा उसके रूचि के अनुसार विषय चयन करने में सहयोग करें।
4. माता–पिता को अपने बच्चों के लिए पर्याप्त समय निकालना चाहिए तथा उनसे विचार विमर्श कर उनकी बातें को प्राथमिकता देना चाहिए।
5. पालकों द्वारा घर में अच्छी किताबो, साहित्यों का सग्रंह कर उन्हें पढ़ने हेतु बच्चों को प्रेरित किया जावे।
6. अपने पाल्यों की गतिविधियों से अवगत होते रहना चाहिए।

3. शिक्षकों के लिए सुझाव :–

1. शिक्षकों को विद्यार्थी की सीमाओं को देखते हुए उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।
2. शिक्षकों को विद्यार्थियों की रूचि एवं योग्यता के अनुसार विषय के चयन और उसकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए।
3. शिक्षकों को बालकों की समस्याओं को सुनना एवं उनका निराकरण करने का प्रयास करना चाहिए।
4. शिक्षक पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य विद्यालयीन गतिविधियों में भी छात्रों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
5. शिक्षकों को बच्चे में आत्मविश्वास के गुणों को डालना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथों की सूची :–

1. Rafiq Ahmad Lone. (2021). Self-confidence among Students and its Impact on their Academic Performance: A Systematic Review. International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT). Volume 9, Issue 5.
2. Omidullah Akbari & Javed Sahibzada (2020) Students' Self-Confidence and Its Impacts on Their Learning Process. American International Journal of Social Science Research; Vol. 5, No. 1
3. Dian Anggeraini and Muh. Farozin. (2019). "Interpersonal Communication Skills and Self Confidence of Secondary School Students: Findings and Interventions" in International Conference on Meaningful Education, KnE Social Sciences, pages 140–145.
4. इंटरनेट से प्राप्त गार्डनर थ्योरी।
5. भटनागर – शिक्षा मनोविज्ञान।
6. पाण्डेय, डॉ. श्रीधर – शिक्षा मनोविज्ञान एक परिचय।
7. कपील, एच.के. – अनुसंधान विधियां।
8. डॉ. अंशुमंगल – शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ (राधा प्रकाशन आगरा)।
9. पाठक, पी.डी. – शिक्षा मनोविज्ञान।
10. पाण्डेय, के.पी. – नवीन शिक्षा मनोविज्ञान।
11. सिंह, अरूण कुमार – आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान।